श्री गणेशाय नमः

श्री रामचरित मानस

(चतुर्थ सोपान - किष्किन्ध काण्ड)

श्लोक

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ |
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ||
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौं हितौ |
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः || १ ||

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं |
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ||
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं |
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् || २ ||

सोरठा

मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानि कर |
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ||
जरत सकल सुर बृंद बिषम गरल जेहिं पान किय |
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस ||

आगें चले बहुरि रघुराया | रिष्यमूक परवत निअराया ||
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा | आवत देखि अतुल बल सींवा ||
अति सभीत कह सुनु हनुमाना | पुरुष जुगल बल रूप निधाना ||
धरि बटु रूप देखु तैं जाई | कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

पठए बालि होहिं मन मैला | भागौं तुरत तजौं यह सैला ||
बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ | माथ नाइ पूछत अस भयऊ ||
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा | छत्री रूप फिरहु बन बीरा ||
कठिन भूमि कोमल पद गामी | कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी ||

मृदुल मनोहर सुंदर गाता | सहत दुसह बन आतप बाता ||
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ | नर नारायन की तुम्ह दोऊ ||

दोहा
जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार |
की तुम्ह अकिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार || १ ||

कोसलेस दसरथ के जाए । हम पितु बचन मानि बन आए ||
नाम राम लछिमन दौउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई ||
इहाँ हरि निसिचर बैदेही | बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही ||
आपन चरित कहा हम गाई | कहहु बिप्र निज कथा बुझाई ||

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना | सो सुख उमा नहिं बरना ||
पुलकित तन मुख आव न बचना | देखत रुचिर बेष कै रचना ||
पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही | हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही ||
मोर न्याउ मैं पूछा साईं | तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं ||
तव माया बस फिरउँ भुलाना | ता ते मैं नहिं प्रभु पहिचाना ||

दोहा
एकु मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अग्यान |
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान || २ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरें | सेवक प्रभुहि परै जनि भोरें ||
नाथ जीव तव मायाँ मोहा | सो निस्तरइ तुम्हारेहिं छोहा ||
ता पर मैं रघुबीर दोहाई | जानउँ नहिं कछु भजन उपाई ||
सेवक सुत पति मातु भरोसें | रहइ असोच बनइ प्रभु पोसें ||

अस कहि परेउ चरन अकुलाई | निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई ||
तब रघुपति उठाइ उर लावा | निज लोचन जल सींचि जुड़ावा ||
सुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना | तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना ||
समदरसी मोहि कह सब कोऊ | सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ ||

दोहा
सो अनन्य जाकें असि मति न टरइ हनुमंत |
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत || ३ ||

देखि पवन सुत पति अनुकूला | हृदयँ हरष बीती सब सूला ||
नाथ सैल पर कपिपति रहई | सो सुग्रीव दास तव अहई ||
तेहि सन नाथ मयत्री कीजे | दीन जानि तेहि अभय करीजे ||
सो सीता कर खोज कराइहि | जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि ||

एहि बिधि सकल कथा समुझाई | लिए दुऔ जन पीठि चढ़ाई ||
जब सुग्रीवँ राम कहुँ देखा | अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ||
सादर मिलेउ नाइ पद माथा | भैंटेउ अनुज सहित रघुनाथा ||
कपि कर मन बिचार एहि रीती | करिहहिं बिधि मो सन ए प्रीती ||

दोहा
तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ |
पावक साखी देइ करि जोरी प्रीती दृढ़ाइ || ४ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

कीन्ही प्रीति कछु बीच न राखा | लछमिन राम चरित सब भाषा ||
कह सुग्रीव नयन भरि बारी | मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी ||
मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा | बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा ||
गगन पंथ देखी मैं जाता | परबस परी बहुत बिलपाता ||

राम राम हा राम पुकारी | हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी ||
मागा राम तुरत तेहिं दीन्हा | पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ||
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा | तजहु सोच मन आनहु धीरा ||
सब प्रकार करिहउँ सेवकाई | जेहि बिधि मिलिहि जानकी आई ||

दोहा
सखा बचन सुनि हरषे कृपासिधु बलसींव |
कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव || ५ ||

नात बालि अरु मैं द्वौ भाई | प्रीति रही कछु बरनि न जाई ||
मय सुत मायावी तेहि नाऊँ | आवा सो प्रभु हमरें गाऊँ ||
अर्ध राति पुर द्वार पुकारा | बाली रिपु बल सहै न पारा ||
धावा बालि देखि सो भागा | मैं पुनि गयउँ बंधु सँग लागा ||

गिरिबर गुहाँ पैठ सो जाई | तब बालीं मोहि कहा बुझाई ||
परिखेसु मोहि एक पखवारा | नहिं आवौं तब जानेसु मारा ||
मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी | निसरी रुधिर धार तहँ भारी ||
बालि हतेसि मोहि मारिहि आई | सिला देइ तहँ चलेउँ पराई ||

मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साईं | दीन्हेउ मोहि राज बरिआई ||
बालि ताहि मारि गृह आवा | देखि मोहि जियँ भेद बढ़ावा ||
रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी | हरि लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी ||
ताकें भय रघुबीर कृपाला | सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

इहाँ साप बस आवत नाहीं | तदपि सभीत रहउँ मन माहीं ||
सुनि सेवक दुख दीनदयाला | फरकि उठीं द्वै भुजा बिसाला ||

दोहा

सुनु सुग्रीव मारिहउँ बालिहि एकहिं बान |
ब्रम्ह रुद्र सरनागत गएँ न उबरिहिं प्रान || ६ ||

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी | तिन्हहि बिलोकत पातक भारी ||
निज दुख गिरि सम रज करि जाना | मित्रक दुख रज मेरु समाना ||
जिन्ह कें असि मति सहज न आई | ते सठ कत हठि करत मिताई ||
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा | गुन प्रगटे अवगुनन्हि दुरावा ||

देत लेत मन संक न धरई | बल अनुमान सदा हित करई ||
बिपति काल कर सतगुन नेहा | श्रुति कह संत मित्र गुन एहा ||
आगें कह मृदु बचन बनाई | पाछें अनहित मन कुटिलाई ||
जा कर चित अहि गति सम भाई | अस कुमित्र परिहरेहि भलाई ||

सेवक सठ नृप कृपन कुनारी | कपटी मित्र सूल सम चारी ||
सखा सोच त्यागहु बल मोरें | सब बिधि घटब काज मैं तोरें ||
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा | बालि महाबल अति रनधीरा ||
दुंदुभी अस्थि ताल देखराए | बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए ||

देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती | बालि बधब इन्ह भइ परतीती ||
बार बार नावइ पद सीसा | प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा ||
उपजा ग्यान बचन तब बोला | नाथ कृपाँ मन भयउ अलोला ||
सुख संपति परिवार बड़ाई | सब परिहरि करिहउँ सेवकाई ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

ए सब रामभगति के बाधक | कहहिं संत तब पद अवराधक ||
सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं | माया कृत परमारथ नाहीं ||
बालि परम हित जासु प्रसादा | मिलेहु राम तुम्ह समन बिषादा ||
सपनें जेहि सन होइ लराई | जागें समुझत मन सकुचाई ||

अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती | सब तजि भजनु करौं दिन राती ||
सुनि बिराग संजुत कपि बानी | बोले बिहँसि रामु धनुपानी ||
जो कछु कहेहु सत्य सब सोई | सखा बचन मम मृषा न होई ||
नट मरकट इव सबहि नचावत | रामु खगेस बेद अस गावत ||

लै सुग्रीव संग रघुनाथा | चले चाप सायक गहि हाथा ||
तब रघुपति सुग्रीव पठावा | गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ||
सुनत बालि क्रोधातुर धावा | गहि कर चरन नारि समुझावा ||
सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा | ते द्वौ बंधु तेज बल सींवा ||
कोसलेस सुत लछिमन रामा | कालहु जीति सकहिं संग्रामा ||

दोहा
कह बालि सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ |
जौं कदाचि मोहि मारहिं तौ पुनि होउँ सनाथ || ७ ||

अस कहि चला महा अभिमानी | तृन समान सुग्रीवहि जानी ||
भिरे उभौ बाली अति तर्जा | मुठिका मारि महाधुनि गर्जा ||
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा | मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा ||
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला | बंधु न होइ मोर यह काला ||

एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ | तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ ||
कर परसा सुग्रीव सरीरा | तनु भा कुलिस गई सब पीरा ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

मेली कंठ सुमन कै माला | पठवा पुनि बल देइ बिसाला ||
पुनि नाना बिधि भई लराई | बिटप ओट देखहिं रघुराई ||

दोहा

बहु छल बल सुग्रीव कर हियँ हारा भय मानि |
मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि || ८ ||

परा बिकल महि सर के लागें | पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगें ||
स्याम गात सिर जटा बनाएँ | अरुन नयन सर चाप चढ़ाएँ ||
पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा | सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा ||
हृदयँ प्रीति मुख बचन कठोरा | बोला चितइ राम की ओरा ||

धर्म हेतु अवतरेहु गोसाई | मारेहु मोहि ब्याध की नाई ||
मैं बैरी सुग्रीव पिआरा | अवगुन कबन नाथ मोहि मारा ||
अनुज बधू भगिनी सुत नारी | सुनु सठ कन्या सम ए चारी ||
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई | ताहि बधें कछु पाप न होई ||

मुढ़ तोहि अतिसय अभिमाना | नारि सिखावन करसि न काना ||
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी | मारा चहसि अधम अभिमानी ||

दोहा

सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि |
प्रभु अजहूँ मैं पापी अंतकाल गति तोरि || ९ ||

सुनत राम अति कोमल बानी | बालि सीस परसेउ निज पानी ||
अचल करौं तनु राखहु प्राना | बालि कहा सुनु कृपानिधाना ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं | अंत राम कहि आवत नाहीं ||
जासु नाम बल संकर कासी | देत सबहि सम गति अविनासी ||
मम लोचन गोचर सोइ आवा | बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा ||

छंद
सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं |
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ||
मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरही |
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही || १ ||

अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊँ |
जेहिं जोनि जन्मौं कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ ||
यह तनय मम सम बिनय बल कल्यानप्रद प्रभु लीजिऐ |
गहि बाहँ सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिऐ || २ ||

दोहा
राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग |
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग || १० ||

राम बालि निज धाम पठावा | नगर लोग सब ब्याकुल धावा ||
नाना बिधि बिलाप कर तारा | छूटे केस न देह सँभारा ||
तारा बिकल देखि रघुराया | दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ||
छिति जल पावक गगन समीरा | पंच रचित अति अधम सरीरा ||

प्रगट सो तनु तव आगें सोवा | जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा ||
उपजा ग्यान चरन तब लागी | लीन्हेसि परम भगति बर मागी ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

उमा दारु जोषित की नाई | सबहि नचावत रामु गोसाई ||
तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा | मृतक कर्म बिधिबत सब कीन्हा ||

राम कहा अनुजहि समुझाई | राज देहु सुग्रीवहि जाई ||
रघुपति चरन नाइ करि माथा | चले सकल प्रेरित रघुनाथा ||

दोहा

लछिमन तुरत बोलाए पुरजन बिप्र समाज |
राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुबराज || ११ ||

उमा राम सम हित जग माहीं | गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ||
सुर नर मुनि सब कै यह रीती | स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ||
बालि त्रास ब्याकुल दिन राती | तन बहु ब्रन चिंताँ जर छाती ||
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ | अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ ||

जानतहुँ अस प्रभु परिहरहीं | काहे न बिपति जाल नर परहीं ||
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई | बहु प्रकार नृपनीति सिखाई ||
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा | पुर न जाउँ दस चारि बरीसा ||
गत ग्रीषम बरषा रितु आई | रहिहउँ निकट सैल पर छाई ||

अंगद सहित करहु तुम्ह राजू | संतत हृदय धरेहु मम काजू ||
जब सुग्रीव भवन फिरि आए | रामु प्रबरषन गिरि पर छाए ||

दोहा

प्रथमहिं देवन्ह गिरि गुहा राखेउ रुचिर बनाइ |
राम कृपानिधि कछु दिन बास करहिंगे आइ || १२ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

सुंदर बन कुसुमित अति सोभा | गुंजत मधुप निकर मधु लोभा ||
कंद मूल फल पत्र सुहाए | भए बहुत जब ते प्रभु आए ||
देखि मनोहर सैल अनूपा | रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा ||
मधुकर खग मृग तनु धरि देवा | करहिं सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा ||

मंगलरुप भयउ बन तब ते | कीन्ह निवास रमापति जब ते ||
फटिक सिला अति सुभ्र सुहाई | सुख आसीन तहाँ द्वौ भाई ||
कहत अनुज सन कथा अनेका | भगति बिरति नृपनीति बिबेका ||
बरषा काल मेघ नभ छाए | गरजत लागत परम सुहाए ||

दोहा
लछिमन देखु मोर गन नाचत बारिद पैखि |
गृही बिरति रत हरष जस बिष्नु भगत कहुँ देखि || १३ ||

घन घमंड नभ गरजत घोरा | प्रिया हीन डरपत मन मोरा ||
दामिनि दमक रह न घन माहीं | खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ||
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ | जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ ||
बूँद अघात सहहिं गिरि कैंसें | खल के बचन संत सह जैसें ||

छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई | जस थोरेहुँ धन खल इतराई ||
भूमि परत भा ढाबर पानी | जनु जीवहि माया लपटानी ||
समिटि समिटि जल भरहिं तलावा | जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा ||
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई | होई अचल जिमि जिव हरि पाई ||

दोहा
हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहिं नहिं पंथ |
जिमि पाखंड बाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ || १४ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई | बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ||
नव पल्लव भए बिटप अनेका | साधक मन जस मिलें बिबेका ||
अर्क जबास पात बिनु भयऊ | जस सुराज खल उद्यम गयऊ ||
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी | करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी ||

ससि संपन्न सोह महि कैसी | उपकारी कै संपति जैसी ||
निसि तम घन खद्योत बिराजा | जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ||
महाबृष्टि चलि फूटि किआरीं | जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारीं ||
कृषी निरावहिं चतुर किसाना | जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ||

देखिअत चक्रबाक खग नाहीं | कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ||
ऊषर बरषइ तृन नहिं जामा | जिमि हरिजन हियँ उपज न कामा ||
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा | प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा ||
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना | जिमि इंद्रिय गन उपजें ग्याना ||

दोहा
कबहुँ प्रबल बह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं |
जिमि कपूत के उपजें कुल सद्धर्म नसाहिं || १५ (क) ||
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग |
बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग || १५ (ख) ||

बरषा बिगत सरद रितु आई | लछिमन देखहु परम सुहाई ||
फूलें कास सकल महि छाई | जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ||
उदित अगस्ति पंथ जल सोषा | जिमि लोभहि सोषइ संतोषा ||
सरिता सर निर्मल जल सोहा | संत हृदय जस गत मद मोहा ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

रस रस सूख सरित सर पानी | ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ||
जानि सरद रितु खंजन आए | पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ||
पंक न रेनु सोह असि धरनी | नीति निपुन नृप कै जसि करनी ||
जल संकोच बिकल भइँ मीना | अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ||

बिनु धन निर्मल सोह अकासा | हरिजन इव परिहरि सब आसा ||
कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी | कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ||

दोहा
चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि |
जिमि हरिभगत पाइ श्रम तजहि आश्रमी चारि || १६ ||

सुखी मीन जे नीर अगाधा | जिमि हरि सरन न एकउ बाधा ||
फूलें कमल सोह सर कैसा | निर्गुन ब्रम्ह सगुन भएँ जैसा ||
गुंजत मधुकर मुखर अनूपा | सुंदर खग रव नाना रूपा ||
चक्रबाक मन दुख निसि पैखी | जिमि दुर्जन पर संपति देखी ||

चातक रटत तृषा अति ओही | जिमि सुख लहइ न संकरद्रोही ||
सरदातप निसि ससि अपहरई | संत दरस जिमि पातक टरई ||
देखि इंदु चकोर समुदाई | चितवतहिं जिमि हरिजन हरि पाई ||
मसक दंस बीते हिम त्रासा | जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा ||

दोहा
भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ |
सदगुर मिले जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ || १७ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

बरषा गत निर्मल रितु आई | सुधि न तात सीता कै पाई ||
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं | कालहु जीत निमिष महुँ आनौं ||
कतहुँ रहउ जौं जीवति होई | तात जतन करि आनेउँ सोई ||
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी | पावा राज कोस पुर नारी ||

जेहिं सायक मारा मैं बाली | तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ||
जासु कृपाँ छूटहीं मद मोहा | ता कहुँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ||
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी | जिन्ह रघुबीर चरन रति मानी ||
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना | धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ||

दोहा
तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सींव |
भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव || १८ ||

इहाँ पवनसुत हृदयँ बिचारा | राम काजु सुग्रीवँ बिसारा ||
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा | चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा ||
सुनि सुग्रीवँ परम भय माना | बिषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ||
अब मारुतसुत दूत समूहा | पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ||

कहहु पाख महुँ आव न जोई | मोरें कर ता कर बध होई ||
तब हनुमंत बोलाए दूता | सब कर करि सनमान बहूता ||
भय अरु प्रीति नीति देखाई | चले सकल चरनन्हि सिर नाई ||
एहि अवसर लछिमन पुर आए | क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाए ||

दोहा
धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करउँ पुर छार |
ब्याकुल नगर देखि तब आयउ बालिकुमार || १९ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

चरन नाइ सिरु बिनती कीन्ही | लछिमन अभय बाँह तेहि दीन्ही ||
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना | कह कपीस अति भयँ अकुलाना ||
सुनु हनुमंत संग लै तारा | करि बिनती समुझाउ कुमारा ||
तारा सहित जाइ हनुमाना | चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना ||

करि बिनती मंदिर लै आए | चरन पखारि पलँग बैठाए ||
तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा | गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ||
नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं | मुनि मन मोह करइ छन माहीं ||
सुनत बिनीत बचन सुख पावा | लछिमन तेहि बहु बिधि समुझावा ||
पवन तनय सब कथा सुनाई | जेहि बिधि गए दूत समुदाई ||

दोहा
हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ |
रामानुज आगें करि आए जहँ रघुनाथ || २० ||

नाइ चरन सिरु कह कर जोरी | नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी ||
अतिसय प्रबल देव तब माया | छूटइ राम करहु जौं दाया ||
बिषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी | मैं पावँर पसु कपि अति कामी ||
नारि नयन सर जाहि न लागा | घोर क्रोध तम निसि जो जागा ||

लोभ पाँस जेहिं गर न बँधाया | सो नर तुम्ह समान रघुराया ||
यह गुन साधन तें नहिं होई | तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई ||
तब रघुपति बोले मुसकाई | तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ||
अब सोइ जतनु करहु मन लाई | जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

दोहा
एहि बिधि होत बतकही आए बानर जूथ |
नाना बरन सकल दिसि देखिअ कीस बरुथ || २१ ||

बानर कटक उमा में देखा | सो मूरुख जो करन चह लेखा ||
आइ राम पद नावहिं माथा | निरखि बदनु सब होहिं सनाथा ||
अस कपि एक न सेना माहीं | राम कुसल जेहि पूछी नाहीं ||
यह कछु नहिं प्रभु कइ अधिकाई | बिस्वरूप ब्यापक रघुराई ||

ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई | कह सुग्रीव सबहि समुझाई ||
राम काजु अरु मोर निहोरा | बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ||
जनकसुता कहुँ खोजहु जाई | मास दिवस महँ आएहु भाई ||
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाएँ | आवइ बनिहि सो मोहि मराएँ ||

दोहा
बचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरंत |
तब सुग्रीवँ बोलाए अंगद नल हनुमंत || २२ ||

सुनहु नील अंगद हनुमाना | जामवंत मतिधीर सुजाना ||
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू | सीता सुधि पूँछेउ सब काहू ||
मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु | रामचंद्र कर काजु सँवारेहु ||
भानु पीठि सेइअ उर आगी | स्वामिहि सर्ब भाव छल त्यागी ||

तजि माया सेइअ परलोका | मिटहिं सकल भव संभव सोका ||
देह धरे कर यह फलु भाई | भजिअ राम सब काम बिहाई ||
सोइ गुनग्य सोई बड़भागी | जो रघुबीर चरन अनुरागी ||
आयसु मागि चरन सिरु नाई | चले हरषि सुमिरत रघुराई ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

पाछें पवन तनय सिरु नावा | जानि काज प्रभु निकट बोलावा ||
परसा सीस सरोरुह पानी | करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ||
बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु | कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आएहु ||
हनुमत जन्म सुफल करि माना | चलेउ हृदयँ धरि कृपानिधाना ||
जद्यपि प्रभु जानत सब बाता | राजनीति राखत सुरत्राता ||

दोहा
चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह |
राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह || २३ ||

कतहुँ होइ निसिचर सैं भेटा | प्रान लेहिं एक एक चपेटा ||
बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं | कोउ मुनि मिलत ताहि सब घेरहिं ||
लागि तृषा अतिसय अकुलाने | मिलइ न जल घन गहन भुलाने ||
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना | मरन चहत सब बिनु जल पाना ||

चढ़ि गिरि सिखर चहूँ दिसि देखा | भूमि बिबिर एक कौतुक पेखा ||
चक्रबाक बक हंस उड़ाहीं | बहुतक खग प्रबिसहिं तेहि माहीं ||
गिरि ते उतरि पवनसुत आवा | सब कहुँ लै सोइ बिबर देखावा ||
आगें कै हनुमंतहि लीन्हा | पैठे बिबर बिलंबु न कीन्हा ||

दोहा
दीख जाइ उपवन बर सर बिगसित बहु कंज |
मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तप पुंज || २४ ||

दूरि ते ताहि सबन्हि सिर नावा | पूछें निज बृत्तांत सुनावा ||
तेहिं तब कहा करहु जल पाना | खाहु सुरस सुंदर फल नाना ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

मज्जनु कीन्ह मधुर फल खाए | तासु निकट पुनि सब चलि आए ||
तेहिं सब आपनि कथा सुनाई | मैं अब जाब जहाँ रघुराई ||

मूदहु नयन बिबर तजि जाहू | पैहहु सीतहि जनि पछिताहू ||
नयन मूदि पुनि देखहिं बीरा | ठाढ़े सकल सिंधु कें तीरा ||
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा | जाइ कमल पद नाएसि माथा ||
नाना भाँति बिनय तेहिं कीन्ही | अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही ||

दोहा
बदरीबन कहुँ सो गई प्रभु अग्या धरि सीस |
उर धरि राम चरन जुग जे बंदत अज ईस || २५ ||

इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं | बीती अवधि काज कछु नाहीं ||
सब मिलि कहहिं परस्पर बाता | बिनु सुधि लएँ करब का भ्राता ||
कह अंगद लोचन भरि बारी | दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ||
इहाँ न सुधि सीता कै पाई | उहाँ गएँ मारिहि कपिराई ||

पिता बधे पर मारत मोही | राखा राम निहोर न ओही ||
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं | मरन भयउ कछु संसय नाहीं ||
अंगद बचन सुनत कपि बीरा | बोलि न सकहिं नयन बह नीरा ||
छन एक सोच मगन होइ रहे | पुनि अस वचन कहत सब भए ||

हम सीता कै सुधि लिन्हें बिना | नहिं जैहैं जुबराज प्रबीना ||
अस कहि लवन सिंधु तट जाई | बैठे कपि सब दर्भ डसाई ||
जामवंत अंगद दुख देखी | कहिं कथा उपदेस बिसेषी ||
तात राम कहुँ नर जनि मानहु | निर्गुन ब्रम्ह अजित अज जानहु ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

दोहा

निज इच्छा प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि |
सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि || २६ ||

एहि बिधि कथा कहहि | बहु भाँती गिरि कंदराँ सुनी संपाती ||
बाहेर होइ देखि बहु कीसा | मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ||
आजु सबहि कहँ भच्छन करऊँ | दिन बहु चले अहार बिनु मरऊँ ||
कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा | आजु दीन्ह बिधि एकहिं बारा ||

डरपे गीध बचन सुनि काना | अब भा मरन सत्य हम जाना ||
कपि सब उठे गीध कहँ देखी | जामवंत मन सोच बिसेषी ||
कह अंगद बिचारि मन माहीं | धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ||
राम काज कारन तनु त्यागी | हरि पुर गयउ परम बड़ भागी ||

सुनि खग हरष सोक जुत बानी | आवा निकट कपिन्ह भय मानी ||
तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई | कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ||
सुनि संपाति बंधु कै करनी | रघुपति महिमा बधुबिधि बरनी ||

दोहा

मोहि लै जाहु सिंधुतट देउँ तिलांजलि ताहि |
बचन सहाइ करवि मैं पैहहु खोजहु जाहि || २७ ||

अनुज क्रिया करि सागर तीरा। कहि निज कथा सुनहु कपि बीरा॥
हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई । गगन गए रबि निकट उडाई॥
तेज न सहि सक सो फिरि आवा । मै अभिमानी रबि निअरावा ॥
जरे पंख अति तेज अपारा । परेउँ भूमि करि घोर चिकारा ॥

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

मुनि एक नाम चंद्रमा ओही | लागी दया देखी करि मोही ||
बहु प्रकार तेंहि ग्यान सुनावा | देहि जनित अभिमानी छड़ावा ||
त्रेताँ ब्रह्म मनुज तनु धरिही | तासु नारि निसिचर पति हरिही ||
तासु खोज पठइहि प्रभू दूता | तिन्हहि मिलें तैं होब पुनीता ||

जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता | तिन्हहि देखाइ देहेसु तैं सीता ||
मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू | सुनि मम बचन करहु प्रभु काजू ||
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका | तहँ रह रावन सहज असंका ||
तहँ असोक उपबन जहँ रहई | सीता बैठि सोच रत अहई ||

दोहा
मैं देखउँ तुम्ह नाहि गीघहि दष्टि अपार |
बूढ भयउँ न त करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार || २८ ||

जो नाघइ सत जोजन सागर | करइ सो राम काज मति आगर ||
मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा | राम कृपाँ कस भयउ सरीरा ||
पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं | अति अपार भवसागर तरहीं ||
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई | राम हृदयँ धरि करहु उपाई ||

अस कहि गरुड़ गीध जब गयऊ | तिन्ह कें मन अति बिसमय भयऊ ||
निज निज बल सब काहूँ भाषा | पार जाइ कर संसय राखा ||
जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा | नहिं तन रहा प्रथम बल लेसा ||
जबहिं त्रिबिक्रम भए खरारी | तब मैं तरुन रहेउँ बल भारी ||

दोहा
बलि बाँधत प्रभु बाढेउ सो तनु बरनि न जाई |
उभय धरी महँ दीन्ही सात प्रदच्छिन धाइ || २९ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

अंगद कहइ जाउँ मैं पारा | जियँ संसय कछु फिरती बारा ||
जामवंत कह तुम्ह सब लायक | पठइअ किमि सब ही कर नायक ||
कहइ रीछपति सुनु हनुमाना | का चुप साधि रहेहु बलवाना ||
पवन तनय बल पवन समाना | बुधि बिबेक बिग्यान निधाना ||

कवन सो काज कठिन जग माहीं | जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं ||
राम काज लगि तब अवतारा | सुनतहिं भयउ पर्वताकारा ||
कनक बरन तन तेज बिराजा | मानहु अपर गिरिन्ह कर राजा ||
सिंहनाद करि बारहिं बारा | लीलहीं नाषउँ जलनिधि खारा ||

सहित सहाय रावनहि मारी | आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी ||
जामवंत मैं पूँछउँ तोही | उचित सिखावनु दीजहु मोही ||
एतना करहु तात तुम्ह जाई | सीतहि देखि कहहु सुधि आई ||
तब निज भुज बल राजिव नैना | कौतुक लागि संग कपि सेना ||

छंदः

कपि सेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहैं |
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ||
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई |
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई ||

दोहा

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर अरु नारि |
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करिहि त्रिसिरारि || ३० (क) ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

सोरठा

नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक |

सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक || ३० (ख) ||

मासपारायण - तेईसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरित मानसे सकलकलिकलुष विध्वंसने चतुर्थ सोपान समाप्तः

किष्किन्धाकाण्ड समाप्त:

www.viswakalyanam.org

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133